



## International Journal of Advanced Academic Studies

E-ISSN: 2706-8927

P-ISSN: 2706-8919

[www.allstudyjournal.com](http://www.allstudyjournal.com)

IJAAS 2022; 4(2): 208-211

Received: 23-03-2022

Accepted: 11-05-2022

### प्रमथ नाथ झा

रिसर्च स्कॉलर, शिक्षा विभाग,  
ललित नारायण मिथिला  
विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार,  
भारत

### डॉ. कल्याणी कुमारी

सहायक प्रोफेसर, डॉ. जाकिर  
हुसैन शिक्षक प्रशिक्षण  
महाविद्यालय, दरभंगा, बिहार,  
भारत

### Corresponding Author:

### प्रमथ नाथ झा

रिसर्च स्कॉलर, शिक्षा विभाग,  
ललित नारायण मिथिला  
विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार,  
भारत

## माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के सांवेगिक बुद्धि तथा समायोजन का उनके सामाजिक विज्ञान में उपलब्धि पर प्रभाव

प्रमथ नाथ झा, डॉ. कल्याणी कुमारी

### सारांश

बालक की व्यक्तिगत प्रगति, उसका मानसिक, शारीरिक तथा भावनात्मक विकास शिक्षा के माध्यम से ही प्राप्त किये जा सकते हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। प्राचीन काल में मानव समाज शिक्षा मूल्य जैसे शब्दों से वह अनजान थे कि कैसे एकीकरण की भावना का विकास हुआ समाज की आवश्यकताओं को महसूस किया एवं मूल्यों को महत्वपूर्ण स्थान दिया शिक्षा के पाठ्यक्रम का निर्माण किया तथा मूल्यों को ध्यान में रखकर उसे सर्वोच्च स्थान दिया। वर्तमान शिक्षा प्रणाली सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान पर भी बल देती है, किंतु आज के समय में व्यावहारिक ज्ञान पर ध्यान ना के बराबर दिया जा रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप बालकों को किताबी ज्ञान तो प्राप्त हो गया है लेकिन इसको जीवन में किस तरह उपयोग में लाना है उसमें सक्षम नहीं हो पा रहे हैं। यह आलेख इस दृश्य का विश्लेषण करता है कि अनूकलन का छात्रों के जीवन पर कितना प्रभाव है। समायोजन एक अत्यंत आवश्यक मानसिक स्थिति की एक पहलू है जिसमें छात्रों की सांवेगिक बुद्धि समय की मांग के अनुसार अनूकलन एवं सामंजस्य का अपने व्यवहार में परिवर्तन का वातावरण से सामंजस्य स्थापित करता है।

**कुटशब्द** : सांवेगिक बुद्धि, समायोजन, सामाजिक विज्ञान में उपलब्धि पर प्रभाव

### प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में उल्लेख है कि शिक्षा द्वारा आर्थिक सामाजिक स्थिति का विकास करना है जिससे बालकों में नैतिक सामाजिक एवम आध्यात्मिक मूल्य का विकास हो शिक्षा के बिना विकास की गति धीमी हो जाती है। विश्व में जहां विकास में प्रगति हो रही है वहां शिक्षा और शिक्षण के बिना छात्रों का विकास संभव नहीं हो पाता है। शिक्षा छात्र की समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति कर वह उनको समायोजित करने में सक्षम बनाता है। जो छात्र अपने को समायोजित नहीं कर पाते वह कुंठा, हीनता एवं अन्य दुर्बलताओं का शिकार हो जाते हैं। वर्तमान समय में व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति में लगा हुआ है। भौतिक आवश्यकताएं इतनी होती जा रही है कि सामाजिक मूल्य मानकों को ध्यान नहीं देता है। आत्म सम्मान की संतुष्ट के आभाव में वह लाचार, हतोत्साहित एवं कमजोर महसूस करता है। आत्मसिद्धि वह आवश्यकता है जिसमें अपनी योग्यता और नाम के अनुरूप अपने आप को विकसित करके विकास करता है तथा समायोजित होता है। मानव व्यवहार का नियंत्रण करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

मैस्लो ने अपने ध्यान द्वारा स्पष्ट किया कि स्थायित्व उसके व्यवहार के साथ अंतर्क्रिया स्थापित कर लेती है जीवन की विभिन्न परिस्थितियों तथा जटिलताओं से संघर्ष करते हुए समस्याओं पर विजय प्राप्त करने का गुण है।

मानव विकास में शिक्षा की आधारभूत भूमिका है। बालक की मूल प्रवृत्तियों का शोधन कर उन्हें समाज का एक उपयोगी अंग बनाने का कार्य शिक्षा द्वारा ही किया जाता है। पारिवारिक वातावरण में बालक का शारीरिक विकास, सामाजिक, सांवेगिक, भाषा, नैतिकता आदि के विकास हेतु उसे शिक्षा ग्रहण करवाई जाती है। विद्यालय वातावरण में उसे मानसिक बौद्धिक, चिन्तन, तर्क, कल्पना, भाषा, ज्ञान के द्वारा ही विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास किया जाता है। शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति अपने जीवन काल में जो कुछ भी सीखता है, अपनाता है, अनुभव करता है वह शिक्षा के द्वारा ही संभव है।

व्यक्ति का बहुआयामी विकास जैसे शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास शिक्षा के द्वारा ही संभव है। शिक्षा द्वारा व्यक्ति को ज्ञान प्राप्ति, कौशल अर्जन तथा सांस्कृतिक सामुदायिक और सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन की क्षमता की प्रदान की जाती है। महात्मा गांधी ने शिक्षा को मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वोत्तम विकास का आधार माना है क्योंकि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। मनुष्य के शरीर में मस्तिष्क का महत्वपूर्ण स्थान होता है, क्योंकि मनुष्य द्वारा जो भी कार्य किया जाता है वह अपने मस्तिष्क के संकेत अथवा मन के अनुसार करता है। इसी प्रकार जब तक मनुष्य का मन स्वस्थ तथा संवेगों में परिपक्वता नहीं होगी तब तक वह किसी भी कार्य को ठीक प्रकार से नहीं कर सकता। वर्तमान जीवनशैली अत्यधिक जटिलतम होती जा रही है जिसके कारण व्यक्ति को पग-पग पर कठिनाईयों तथा निराशा का सामना करना पड़ता है। मानसिक परेशानियों, अपरिपक्व संवेगों, जीवन की उलझनों तथा असंतुलित वातावरण के कारण व्यक्ति परिवार में समाज में अपने का उचित प्रकार में समायोजित नहीं कर पाते व सफल जीवन जीने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। इसलिये मनुष्य को वातावरण के साथ उचित सामंजस्य स्थापित करने के लिए मानसिक दृष्टि से स्वस्थ होना आवश्यक है।

हम पूर्व में यही धारणा मानते हुये आ रहे कि व्यक्ति की सफलताओं के पीछे उसकी मानसिक क्षमताओं और योग्यताओं का हाथ होता है। इसी कारण मानसिक योग्यता को ज्ञात करने हेतु हमेशा बुद्धिलब्धि को आधार मानकर

भविष्यवाणी की जाती रही है कि व्यक्ति किस कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकेगा। वर्तमान में व्यक्ति की मानसिक बुद्धिलब्धि के स्तर को जानना जितना जरूरी है उससे कहीं ज्यादा उसकी सांवेगिक बुद्धि को जानना है। संवेगों और सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में नवीन सम्प्रत्यय है। मुख्यतः यही समझा जाता है कि व्यक्ति की सफलता और उपलब्धियां उसकी बुद्धि पर आधारित होती हैं जिनकी मानसिक बुद्धिलब्धि अधिक होती है उनकी उपलब्धियां भी अधिक होती है। आधुनिक शोधों से यह स्पष्ट होता है कि बुद्धिलब्धि का तो जीवन में मिलने वाली सफलताओं में केवल 20 प्रतिशत ही योगदान रहता है शेष 80 प्रतिशत योगदान का श्रेय उसकी संवेगात्मक बुद्धि, प्रारब्ध तथा उसके सामाजिक स्तर आदि को जाता है। अब प्रश्न यह उठता है कि सांवेगिक बुद्धि क्या है? सांवेगिक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति की उस समग्र क्षमता से है जो उसे उसकी विचार प्रक्रिया का उपयोग करते हुए अपने तथा दूसरों के संवेगों को जानने, समझने तथा उनका सर्वोत्तम प्रबन्धन करने में उसकी सहायता करती है। सांवेगिक बुद्धि के कारण ही व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में प्रभावी रूप से संवेगों की ऊर्जा तथा सूचना का प्रयोग करता है। व्यक्ति के विचार जो कि सांवेगिक और बौद्धिक होते हैं, शिक्षा उनकी पूर्ण अभिव्यक्ति में सहायक होती है। इसके द्वारा व्यक्ति अपने संवेगों पर नियंत्रण, सहानुभूति, स्वप्रबंधन सामाजिक जागरूकता, मानसिक तनाव नियंत्रण आदि सीखता है एवं इसके द्वारा उपयुक्त निर्णय लेकर प्रत्येक क्षेत्र में समायोजित होकर अच्छा प्रदर्शन करता है। अतः शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों को संवेगात्मक रूप से परिपक्व बनाकर उन्हें वातावरण में उचित समायोजित किया जा सकता है।

सांवेगिक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति विशेष की उस समग्र क्षमता (सामान्य बुद्धि से सम्बन्धित होते हुये भी अपने आप में स्वतंत्र) से है जो उसे उसकी विचार प्रक्रिया का उपयोग करते हुए अपने या दूसरों के संवेगों को जानने, समझने तथा उनकी ऐसी उचित अनुभूति एवं अभिव्यक्ति करने कराने में इस प्रकार मदद करे कि वह ऐसी वांछित व्यवहार अनुक्रियायें कर सके जिनसे उसे दूसरों के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए अपना समुचित हित करने हेतु अधिक से अधिक सुअवसर प्राप्त हो सकें।

तनाव को किसी ऐसे शारीरिक, रासायनिक या भावनात्मक कारक के रूप में समझा जा सकता है, जो शारीरिक तथा मानसिक बैचेनी उत्पन्न करे और वह रोग निर्माण का एक कारक बन सकता है। ऐसे शारीरिक या रासायनिक कारक जो तनाव पैदा कर सकते हैं, उनमें सदमा, संक्रमण चोट तथा

बीमारी शामिल होते हैं।

किसी भी एक नकारात्मक विचार का दिमाग पर हावी हो जाने के बाद हमारी मानसिक स्थिति पर बुरा असर पड़ता है। हमारा मस्तिष्क सही से कार्य करने और किस भी खुशी के मौके प्रसन्न होने में असक्षम हो जाता है। यह तनाव की स्थिति कही जा सकती है। कुछ लोगों में तनाव की खास वजह होती है और कुछ लोगों में कोई खास वजह भी नहीं होती है।

शैक्षिक उपलब्धि या अकादमिक प्रदर्शन वह सीमा है जिस तक एक छात्र शिक्षक या संस्थान ने अपने छोटे या दीर्घकालिक शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त किया है। माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालय के डिप्लोमा और स्नातक की डिग्री जैसे शैक्षिक बेंचमार्क को पूरा करना शैक्षिक उपलब्धि का प्रतिनिधित्व करता है।

विद्यार्थियों द्वारा अर्जित प्राप्तांकों को शैक्षिक उपलब्धि के अन्तर्गत रखा गया है। वार्षिक सत्रांक के अध्ययन के उपरांत समय-समय पर विद्यार्थियों की योग्यता के आंकलन हेतु सत्रीय परीक्षा ली जाती है जिनमें प्राप्त अंकों या प्राप्तांकों के आधार पर विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि को जाना जाता है और उसके अर्जित ज्ञान व योग्यता का मूल्यांकन किया जाता है।

मनुष्य का जीवन चुनौतियों एवं संघर्षों से परिपूर्ण है बचपन से ही हमें जीवन की विविध समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जो जिस सीमा तक जितने अच्छे ढंग से जीवन की इस लड़ाई को लड़ता जाता है वह उतने ही अच्छे रूप से सफलता प्राप्त करता है। हम अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के अतिरिक्त जीवन में बहुत कुछ हासिल करना चाहते हैं और उसके लिए निरन्तर संघर्ष करते हैं, परन्तु कई बार ऐसा होता है कि जो हम चाहते हैं जिसके लिए हम दिन-रात परिश्रम करते हैं। लेकिन उस उद्देश्य की प्राप्ति हमें नहीं होती। ऐसा ना होने की स्थिति में हमारे मन मस्तिष्क में हलचल उत्पन्न हो जाती है। इससे हमारे अन्दर तनाव उत्पन्न हो जाती है। तनाव जीवन की हर अवस्थाओं में उत्पन्न होता है कभी थोड़े रूप में तो कभी ज्यादा। विद्यार्थी जीवन में तनाव की मात्रा अधिक होती है। जिन विद्यार्थियों के जीवन में तनाव की मात्रा कम होगी उसकी शैक्षिक उपलब्धि एवं सफलता भी उतनी अच्छी होगी और जिसमें तनाव की अधिकता रहेगी उनकी शैक्षिक उपलब्धियों के परिणामों में निम्नता होगी अर्थात् अच्छी उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों को सांवेगिक बुद्धि से ही अच्छा होना आवश्यक है। फील्ड के अनुसार व्यक्ति जिस रूप में अपने आप को देखता है वही उसका आत्मा है इनके अनुसार व्यक्ति के रूप में वह है जैसा व्यक्ति को लोग देखते हैं ड्राइवर के अनुसार आत्म शब्द

का प्रयोग अहम अर्थ के रूप में किया जाता है। आइजनेल के अनुसार आत्म का अर्थ मूल रूप से उस प्रत्यक्षीकरण से है जो विषय अपने ही संबंध में करता है। व्यक्ति के स्वयं के प्रति अभिवृत्तियों के तीन पहलू हैं ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा व्यवहारपरक। ज्ञानात्मक पहलू का अर्थ आत्मा की अंतर्वस्तु से है भावनात्मक पहलू का अर्थ और भावनाओं से है जो व्यक्ति अपने स्वयं के प्रति रखता है जबकि व्यवहारात्मक पहलू का अर्थ उसके क्रियाकलापों से है। जहां तक आत्मसिद्धि क्या प्रश्न है वहां मैस्लो ने अपने आवश्यकता के पदानुक्रम में आत्म सिद्धि को उच्चतम स्तर पर स्थान दिया है उन्होंने यह भी बताया आत्म सिद्धि की आवश्यकताएं तभी उत्पन्न होती है जब व्यक्ति आत्मसम्मान की आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेता है उन्होंने मानव अभिप्रेरकों को प्राथमिकता के आधार पर निम्न प्रकार से व्यवस्थित किया।

1. दैहिक या शारीरिक आवश्यकताएं
2. सुरक्षा की आवश्यकता
3. संबद्धता और स्नेह की आवश्यकताएं
4. सम्मान की आवश्यकताएं
5. आत्म शुद्धि की आवश्यकताएं

मैस्लो ने कहा कि आत्मसिद्धि व्यक्ति के उच्चतम स्तर की प्रेरणा को दर्शाती है उसके निम्नलिखित गुण हैं

1. वास्तविकता का सही आकलन
2. स्वयं के महत्व का आकलन
3. सरलता स्वाभाविकता तथा सहजता समस्या केंद्रित
4. एकांत की आवश्यकता
5. वातावरण की स्वतंत्रता
6. प्रशंसा की निरंतरता
7. शीर्ष अनुभूतियां
8. सामाजिक रुचि
9. घनिष्ठ संबंध
10. प्रजातांत्रिक मूल्य
11. सृजनात्मकता
12. संस्कृति के प्रति अनुरूपता

### अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

शैक्षिक महत्व की दृष्टि से आत्मसिद्धि मनुष्य के पूर्ण विकास का मार्ग करता है। यह सिद्धांत बालकों की आयु एवं स्तर के अनुरूप सभी की आवश्यकताओं को निर्धारित करने एवं निर्णय लेने में सहायता करता है। यह बालकों के व्यक्तित्व विकास के

लिए समुचित अभिप्रेरण की व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करता है। जहां तक समायोजन का प्रश्न है यह आवश्यकताओं या इच्छाओं की पूर्ति के लिए परिस्थितियों तथा व्यवहार के मध्य संतुलन है। प्रत्येक व्यक्ति के सम्मुख समायोजन की समस्या होती है। इसका समाधान वह अपनी क्षमता के अनुरूप करता है तथा जब वह समायोजन करने में असफल रहता है तब कुंठा का शिकार हो जाता है।

वैयक्तिक भिन्नता के कारण समायोजन की आवश्यकता अनुभव की जाती है। समायोजन का अर्थ अनुकूलन समंजन सामंजस्य या समन्वय यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने व्यवहार में परिवर्तन करके वातावरण से सामंजस्य स्थापित करता है। गेढ़ के अनुसार निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। समायोजन की निम्न विशेषताएं हैं।

1. समायोजन बहुआयामी है।
2. समायोजन एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है।
3. समायोजन परिस्थितियों के अनुरूप हमारे सोचने की शक्ति और जीने के तरीकों में आवश्यक परिवर्तन करती है।
4. समायोजन हमारी आवश्यकता एवं क्षमताओं के मध्य संतुलन बनाती है।
5. समायोजन खुशी और संतोष प्रदान करती है।

### निष्कर्ष

विद्यार्थी अपने जीवन में अनेक समस्याओं से चिंतित रहते हैं तथा दिग्भ्रमित होकर अपने पथ से भटक जाते हैं ऐसे में शिक्षकों तथा अभिभावकों को उन्हें सही दिशा प्रदान करनी चाहिए। विद्यार्थियों को मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं से जोड़ना चाहिए। विद्यालय स्तर पर परामर्शदाता की नियुक्ति होनी चाहिए। सकारात्मक पालन-पोषण प्रथाओं को प्रोत्साहित करना चाहिए। विद्यार्थियों को एक समान शैक्षिक वातावरण प्रदान करके उनकी उपलब्धि को उच्च बनाया जा सकता है। विद्यार्थियों को शैक्षिक उपलब्धि में उनकी सांवेगिक बुद्धि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः विशेष प्रशिक्षणों के माध्यम से उनकी संवेगात्मक बुद्धि को उच्च बनाने का प्रयास किया जाये। अभिभावकों एवं शिक्षकों को चाहिए कि वह विद्यार्थियों में मानसिक तनाव जैसी गंभीर समस्या के प्रति उन्हें जागरूक करे तथा उसके दृष्टिकोण को विकसित करे ताकि वह भविष्य में आने वाली प्रत्येक समस्या का निराकरण वह स्वविवेक से कर सके।

### संदर्भ

1. डॉ. मंगल एस. के. शिक्षा मनोविज्ञान, पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली); c2013.
2. अस्थाना एवं अग्रवाल. मनोविज्ञान और शिक्षा, द्वितीय संस्करण. आगरा: विनोद प्रकाशन; c2004.
3. भटनागर, ए. बी., भटनागर, डा. मीनाक्षी एवं भटनागर, डॉ. अनुराग. शैक्षिक एवं मानसिक मापन. पूर्णतः संशोधित संस्करण. मेरठ: आर0 लाल बुक डिपो; c2011.
4. गुप्ता, एस. पी. उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. तृतीय संस्करण. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन; c2007.
5. Taroor, Radhika. Strategies for coping academic stress, Edu Tracks. August 2009;8:12.
6. Suvitha D, Gowri AJA, Rajkumar Amertha. Stress among secondary school teachers; c2012.